

श्री कृष्ण सुदामा मिलन

Dr. Geeta Sahay*

Department of Hindi, Gaya College, Gaya, Bihar

सार - 'सुदामा चरित' के पदों में नरोत्तम दास जी ने श्री कृष्ण और सुदामा के मिलन, सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन किया है। सुदामा जी बहुत दिनों के बाद द्वारिका आए। कृष्ण से मिलने के लिए कारण था, उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्ती भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के बाद दो मित्रों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और कृष्ण की उदारता का वर्णन भी किया गया है। किस तरह से उन्होंने मित्रता धर्म निभाते हुए सुदामा के लिए उदारता दिखाई, वह सब किया जो एक मित्र को करना चाहिए। साथ ही में उन्होंने श्री कृष्ण और सुदामा की आपस की नोक-झोंक का बड़ी ही कुशलता से वर्णन किया है। इसमें उन्होंने यह भी दर्शाया है कि श्री कृष्ण कैसे अपने मित्रता धर्म का पालन बिना सुदामा के कहे हुए उनके मन की बात जानकर कर देते हैं। मित्र का यह सबसे प्रथम कर्तव्य रहता है कि वह अपनी मित्र के बिना कहे उसके मन की बात और उसकी अवस्था को जान ले और उसके लिए कुछ करें और उदारता दिखाएँ यही उसकी महानता है।

-----X-----

परीक्षित जी महाराज भाकदेव जी से पूछते हैं! अगर द्वारिका में ठाकुर जी ने किसी भक्त पर कृपा हुई हो तो वृतांत मुझे सुनाईए। भुक्तेव जी कहते हैं कि हे राजन! मैं आपको श्री कृष्ण जी के परम भक्त सुदामा की कथा सुनाऊंगा। सुदामा जी ठाकुर जी के परम मित्र एवं बचपन सखा थे। सुदामा जी ब्रह्मज्ञानी विशयों से विरक्त, भ्रान्तिचित्त और जितेन्द्रिय थे। परन्तु वे इतने ज्यादा गरीब थे कि घर में खाने का एक दाना तक नहीं होता था। कई बार तो भूखा ही सोना पड़ता था परन्तु गरीब होते हुए भी सुदामा दरिद्र नहीं थे लोग सोचते हैं कि जो गरीब होते हैं वे दरिद्र होते हैं परन्तु गुरुदेव जी कहते हैं नहीं! नहीं! दरिद्रता एवं निर्धनता में अन्तर है। ठाकुर जी भक्त गरीब हो सकता है पर दरिद्र नहीं हो सकता। क्योंकि दरिद्र व्यक्ति वो है जिसके पास सब कुछ हो लेकिन संतोश न हो। भास्त्र की दृष्टि में दरिद्र वही है जिसके मन में सब कुछ होने पर भी सन्तोश नहीं है। सुदामा जी को एक वक्त का भोजन भी ठीक से प्राप्त नहीं हो पाता था। घर में दीवार तो है पर छत का ठिकाना नहीं है। घर में टूटे फूटे पात्र थे। सुदामा जी 3-3 दिन तक अपनी पत्नी के साथ भूखे रहते थे। लेकिन कभी भी ठाकुर जी से कियत नहीं की। सुदामा जी की पत्नी का नाम सु ला था। सु ला का जैसा नाम वैसा ही प्रभाव भी था। सु ला कभी भी अपने पति से गरीबी की शिकायत नहीं करती थी। एक दिन सुगीला ने सुदामा से कहा - महाराज घर में बच्चे भूखे हैं खाने को एक भी दाना नहीं है। मैं। इनका पालन पोषण कैसे करूं। मैंने सुना है कि द्वारिकाधी। श्री कृष्ण आपके परम मित्र और बचपन के सखा हैं और वो आपसे

बहुत स्नेह करते हैं। आप कहते हैं कि मेरा मित्र द्वारिका का राजा है। तो आप अपने मित्र के द्वार पर मांगने क्यों नहीं चले जाते।

सुदामा जी ने कहा सुला मर जाऊंगा लेकिन मांगने नहीं जाऊंगा कैसे जाऊं? वो मेरा मित्र है।

सुगीला ने कहा चलो ठीक है आप अपने मित्र से कुछ मांगने मत जाओ पर दनि तो कर आओ। अपने बचनन के मित्र से एक बार मिल तो आओ।

सुदामा जी कहते हैं ठीक है सु ला मैं अपने मित्र कन्हैया से मिलने जरूर जाऊंगा लेकिन घर में कुछ है जो अपने मित्र के पास ले जाऊं? जिसे अपने मित्र को भेंट स्वरूप दे सकूँ?

सुगीला ये जानती थी कि घर में खाने के लिए एक दाना नहीं है। सारे पात्र खाली पड़े हैं, लेकिन फिर भी रसोई घर में गई और चुपके से घर से निकल और चार घर गई और चार तरह के चार मुट्ठी चावले लेकर आई। सुदामा जी को वो चावल एक फटे दुपट्टे में बांध दिए दुपट्टा इतना ज्यादा फटा था कि चार तह करने पर भी फटा हुआ है इतनी गरीबी है। चार की आठ तह करने पर उन्होंने उन चावलों की मुट्ठी को जैसे तैसे लपेटा और सुदामा जी को द्वारिका का राजा है और मैं एक गरीब ब्राह्मण भायद मेरा कन्हैया मुझे ना मिले। लेकिन गुरुदेव जी कहते हैं भगवान की दृष्टि में पैसे का कोई महत्व

नहीं है। धन और बल का कोई महत्व नहीं है। कोई व्यक्ति उंचे ओहदे पर हो उसका कोई महत्व नहीं है। उनकी दृष्टि में तो केवल और केवल भाव का महत्व है।

बिना भाव रीझ नहीं नटवर नंद कि डोर

एक बार मन में आया कि वापिस लौट चलूँ फिर सोचते हैं नहीं मेरे प्रभू तो प्रेम तो प्रेम की मूर्ति हैं। मैं उनसे मिलकर जाऊँगा सुदामा जी को चलते-फिरते भाम हो गई और एक पेड़ के नीचे बैठ गए। रात्रि का प्रहर था तो भगवान को याद करते-करते सो गए। इधर भगवान भी सुदामा को यार कर रहे थे।

गुरुदेव जी कहते हैं इस बात को अच्छी तरह से याद रखना अगर तुम अपने आराध्य को याद करते हो तो भगवान भी एक भक्त की याद में उतना ही रोता है जितना एक भक्त।

भगवान ने सोचा मेरा मित्र थक कर सो गया है और गहरी नींद में है। भगवान योग माया को आज्ञा दी कि तुम जाओ और मेरे मित्र सुदामा को द्वारिका में पहुंचा दो। योग माया में सुदामा को द्वारिका में पहुंचा दिया।

जब सुबह हुई तो सुदामा जी ने देखा चारों तरफ महल ही महल हैं। सुदामा जी सोचते हैं कि हम तो एक पेड़ के नीचे सोये थे तो यहां कैसे पहुंच गए?

सुदामा जी ने राहगीर से पूछा कि भैया ये कौन सा नगर है तो लोगों ने कहा ये द्वारिका है। सुदामा जी ने पूछा अगर ये द्वारिका है तो भैया हमारे कन्हैया का मकान कौन सा है?

दोपहर हो गई सुदामा जी के पास एक यादव आये और बोले हे ब्राह्मण देवता ! मैं सुबह से देख रहा हूँ आप किसका पता पूछ रहे हैं?

सुदामा जी बोले कि यहां कोई मेरे मित्र कन्हैया का मकान नहीं जानता क्या?

वो बोला कि ये सब महल आपके मित्र कृष्ण के हैं। आप जिस भी महल जाओगे आपको आपके मित्र कन्हैया का ही द नि होगा। आप वहां चले जाईए। सुदामा जी को बताकर वो चला गया। अब सुदामा जी महाराज महल के दरवाजे पर पहुंचे हैं। द्वारपालों में अंदर जाने पर रोक दिया। अरे ब्राह्मण! आप कौन हो? कहां से आये हो? और कहां जाओगे?

सुदामा जी कहते हैं भैया आप अन्दर जाकर कृष्ण से केवल इतना कह देना कि तेरा बचपन का मित्र सुदामा मिलने आया है। मेरा कन्हैया सब कुछ समझ जायेगा प्यारे मेरे कन्हैया को ज्यादा बताने की आव यकता नहीं है।

द्वारपाल अन्दर गया। भगवान सिंहासन पर बैठे हैं। उस द्वारपाल ने भगवान को प्रणाम किया उस दीन दा का वर्णन किया और क्या कहा?

सीस पगा न झगा तन में प्रभु जाने को अहि बसे केहि ग्रामा।

धोति फटी सी लटी दुपटी अरु, पाय उपानह नहीं सामा।।

द्वार खड़यो द्विज दुर्बल एक, रहयौ चकिसौं वसुधा अभिरामा।

पूछत दीन दयाल को धाम बतावत अपनौ नाम सुदामा।।

नरोत्तम नाम के कवि ने सुदामा जी की द द्य को बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। आईये आप सब भाव में डूबकर अर्थ समझिए:- द्वारपाल ने ठाकुर जी से कहा कि प्रभु द्वार पर एक ब्राह्मण खड़ा है, जिसके सर पर न पगड़ी है और न तन पर एक फटा पुराना वस्त्र है। फटी हुई धोती है जिसकी हालत जीर्ण- पर्ण है और तो और जूते भी नहीं हैं। जिसके पैरों में बिवाईयां फट रही हैं। प्रभु वो यहां के वैभव को देख कर आ चर्यचकित हो रहा है और उसने अपना नाम सुदामा बताया है।

इस पद में कवि ने सुदामा के श्रीकृष्ण के महल के द्वार पर खड़े होकर अंदर जाने की इजाज़त मांगने का वर्णन किया है।

श्रीकृष्ण का द्वारपाल आकर उन्हें बताता है कि द्वार पर बिना पगड़ी, बिना जूतों के, एक कमज़ोर आदमी फटी सी धोती पहने खड़ा है। वो आश्चर्य से द्वारका को देख रहा है और अपना नाम सुदामा बताते हुए आपका पता पूछ रहा है।

ऐसे बेहाल बेवाइन सों पग, कंटक.जाल लगे पुनि जोये।

हाय! महादुख पायो सखा तुम, आये इतै न किते दिन खोये॥

देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिके करुनानिधि रोये।

पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये॥

सुदामा चरित भावार्थ: द्वारपाल के मुँह से सुदामा के आने का जिक्र सुनते ही श्रीकृष्ण दौड़कर उन्हें लेने जाते हैं। उनके पैरों के छाले, घाव और उनमें चुभे कांटे देखकर श्रीकृष्ण को कष्ट होता है, वो कहते हैं कि मित्र तुमने बड़े दुखों में जीवन व्यतीत किया है। तुम इतने समय मुझसे मिलने क्यों नहीं आ, सुदामा जी की दयनीय दशा देखकर श्रीकृष्ण रो पड़ते हैं और पानी की परात को छुए बिना, अपने आंसुओं से सुदामा जी के पैर धो देते हैं।

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।

चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहीं केहि हेत॥

आगे चना गुरु.मातु दिये त, लिये तुम चाबि हमें नहीं दीने।

श्याम कह्यौ मुसुकाय सुदामा सों, चोरि कि बानि में हौ जू
प्रवीने॥

पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा.रस भीने।

पाछलि बानि अजौं न तजी तुम, तैसइ भाभी के तंदुल कीने॥

सुदामा चरित भावार्थ: सुदामा जी की अच्छी आवभगत करने के बाद कान्हा उनसे मजाक करने लगते हैं। वो सुदामा जी से कहते हैं कि ज़रूर भाभी ने मेरे लिए कुछ भेजा होगा, तुम उसे मुझे दे क्यों नहीं रहे हो? तुम अभी तक सुधरे नहीं। जैसे, बचपन में जब गुरुमाता ने हमें चने दिए थे, तो तुम तब भी चुपके से मेरे हिस्से के चने खा गए थे। वैसे ही आज तुम मुझे भाभी का दिया उपहार नहीं दे रहे हो।

वह पुलकनि वह उठ मिलनि, वह आदर की बात।

यह पठवनि गोपाल की, कछू ना जानी जात॥

घर.घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज।

कहा भयौ जो अब भयौ, हरि को राज.समाज॥

हौं कब इत आवत हुतौ, वाही पठ्यौ ठेलि।

कहिहौं धनि सौं जाइकै, अब धन धरौं सकेलि॥

सुदामा चरित भावार्थ: इस पद में सुदामा के वापिस घर की तरफ लौटने का वर्णन है। वो सोचते हैं कि मैं मदद की उम्मीद लेकर श्रीकृष्ण के पास आया, लेकिन श्रीकृष्ण ने तो मेरी कोई मदद ही नहीं की। लौटते समय निराश और खिन्न सुदामा जी के मन में कई विचार घूम रहे थे, वो सोच रहे थे कि कृष्ण को समझना किसी के वश में नहीं है। एक तरफ तो उसने मुझे इतना आदर.सम्मान दिया, वहीं दूसरी तरफ मुझे बिना कुछ दिए लौटा दिया।

मैं तो यहां आना ही नहीं चाहता है, वो तो मेरी धर्मपत्नी ने मुझे जबरदस्ती द्वारका भेज दिया। ये कृष्ण तो खुद बचपन में ज़रा.से मक्खन के लिए पूरे गाँव के घरों में घूमता था, इससे मदद की आस लगाना ही बेकार था।

वैसेइ राज.समाज बने, गज.बाजि घने, मन संभ्रम छायाँ।

वैसेइ कंचन के सब धाम हैं, द्वारिके के महिलों फिर आयौ।

भौन बिलोकिबे को मन लोचत सोचत ही सब गाँव मँझायौ।

पूछत पाँडे फिरें सबसों पर झोपरी को कहूँ खोज न पायौ॥

सुदामा चरित भावार्थ: जब सुदामा अपने गाँव पहुंचते हैं, तो उन्हें आसपास सबकुछ बदला.बदला दिखता है। सामने बड़े महल, हाथी-घोड़े, गाजे-बाजे आदि देखकर सुदामा जी सोचते हैं कि कहीं मैं रास्ता भटककर फिर से द्वारका नगरी तो नहीं आ पहुंचा हूँ? मगर, थोड़ा ध्यान से देखने पर वो समझ जाते हैं कि ये उनका अपना गाँव ही है। फिर उन्हें अपनी झोंपड़ी की चिंता सताती है, वो बहुत लोगों से पूछते हैं, मगर अपनी झोंपड़ी को ढूँढ नहीं पाते।

कै वह टूटि.सि छानि हती कहाँ, कंचन के सब धाम सुहावत।

कै पग में पनही न हती कहँ, लै गजराजहु ठाढ़े महावत॥

भूमि कठोर पै रात कटै कहाँ, कोमल सेज पै नींद न आवत।

कैं जुरतो नहिं कोदो सवाँ प्रभु, के परताप तै दाख न भावत॥

सुदामा चरित भावार्थ: जब सुदामा जी को श्रीकृष्ण की महिमा समझ आती है, तो वो उनकी महिमा गाने लगते हैं। वो सोचते हैं कि कहाँ तो मेरे सिर पर टूटी झोंपड़ी थी, अब सोने का महल मेरे सामने खड़ा है। कहाँ तो मेरे पास पहनने को जूते नहीं थे, अब मेरे सामने हाथी की सवारी लेकर महावत खड़े हैं। कठोर ज़मीन की जगह मेरे पास नरम बिस्तर हैं। पहले मेरे पास दो वक्त खाने को चावल भी नहीं होते थे, अब मनचाहे पकवान हैं। ये सब प्रभु की कृपा से ही संभव हुआ है, उनकी लीला अपरम्पार है।

जैसे ही भगवान श्री कृष्ण ने सुदामा नाम सुना तो ठाकुर जी अपने सिंहासन से कूद पड़े और सुदामा सुदामा कहते हुए द्वार की ओर दौड़े चले जा रहे हैं।

भगवान श्री कृष्ण के पैरों में कोई चप्पल ना कोई जुत्ती। सुदामा जी का नाम सुन ज्यों ही नंगे पांव दौड़े मुकुट गिर गया भगवान का और कहीं पर पिताम्बर उलझ रहा है। ठाकुर जी का मन सुदामा जी से मिलने के लिए बेचैन है। ठाकुर जी बावरे होकर मतवारे होकर खु। के मारे भागे जा रहे हैं। दौड़ रहे हैं गिर पड़ भी रहे हैं। भगवान को कोई हो। नहीं। जब मेरे कन्हैया की ये द द्य सभी रानियों ने द्वारपालों ने देखी तो सब देखते रह गए। आज वर्षों बाद अपने मित्र सुदामा से मिलने जा रहे हैं बस। जैसे ही वहां द्वार पर पहुंचे

तो सुदामा जी वहां नहीं है। द्वारपालों से पूछा मेरा मित्र सुदामा कहां है?

द्वारपालों ने बताया कि अभी भी सुदामा जी यहां से निकले हैं। भगवान दौड़े और उन्हें सुदामा दिखाई दिया। भगवान ने जोर से आवाज लगाई सुदामा सुदामा। जब सुदामा ने मुड़ कर देखा तो देखते हैं कि कन्हैया नंगे पांव दौड़े चले आ रहे हैं, कन्हैया ने देखते ही सुदामा जी को अपने अंक मं भर लिया और गले से लगा लिया। भगवान रोये जा रहे हैं। रानियां यह दृश्य देख आ चर्य में पड़ गई कि ऐसा कौन सा मित्र आ गया है

जिसको बलराम जी जितना सम्मान दिया जा रहा है।

भगवान ने कहा सुदामा तुम्हें अब याद आई मेरी। सुदामा जी बोले कि कन्हैया याद तो बहुत आती थी। पर तुमसे मिल नहीं पाया। मुझे माफ कर दो कन्हैया।

भगवान सुदामा को अन्दर महल में लेकर गए हैं और जिस सिंहासन पर भगवान खुद बैठते हैं आज उसी सिंहासन पर सुदामा जी को बिठाया है। भगवान सुदामा जी के चरणों में बैठ गए हैं। भगवान भी एक ब्राह्मण का सत्कार कर रहे हैं। गुरुदेव जी कहते हैं घर में कोई भी बड़ा व्यक्ति आये। संत जन, गुरुजन उनके चरण जरूर धोने चाहिए। क्योंकि संतो के चरणों में सब तीर्थ सब धाम निवास करते हैं। उनके चरणों में बहुत भाक्ति होती है।

व्यक्ति की पूजा उसके आचरण से ही क्योंकि चरणों में हम नमन करते हैं और चरणों में ही आचरण होता जिसका आचरण नहीं उसकी क्या पूजा?

ऐसे बेहाल बेवाइन से पग, कंटक-जाल लगे पुजि जोये।

हाय ! महादुख पायो सखा तुम, आये इतै न किते दिन खोये।।

“देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिक करुनानिधि रोये”

भगवान श्री कृष्ण ने अपनी आंखों के आंसुओं से अपने मित्र सुदामा जी के पैर धोये हैं। इतने आंसू भगवान के बहे हैं। ठाकुर जी भी रोने के लिए तैयार हैं। लेकिन आप उनसे प्रेम तो करो। उन्हें याद तो करो। उनकी याद में आंसू तो आये। जब उनकी याद में आपके आंसू आएंगे तो भगवान भी आपको याद करके रोयेंगे।

भगवान अपने मित्र से कहते हैं कि सुदामा मेरे मित्र तुम इतने दिन तक कहां थे सुदामा कहता है प्रभु आप इतना सम्मान दे रहे हो। मैं तो सोच रहा था कि आप मिलोगे भी या नहीं? इतना

कह कर सुदामा जी भी रोने लगे और कहते हैं भगवान आप मुझसे महाराजा जैसा व्यवहार क्यों कर रहे हो।

और इसी तरह दोनों मित्र प्रेम में डूबे हुए हैं। सुदामा जी महाराज कृष्ण जी से कहते हैं त प्रेम देता है, प्रेम लेता है, प्रेम ही खाता है, प्रेम ही पीता है, प्रेम में ही सोता है और प्रेम में ही जगता है। प्यारे तू प्रेम से ही बना है और प्रेम में सुना है। तुम प्रेम की साक्षात् मूर्त हो मेरे प्यारे।

सुदामा जी कहते हैं मैंने सुबह से स्नान नहीं किया। मुझे आप कुआं बताओ कहां पर है और एक रस्सी और एक बाल्टी दे दो। मैं स्नान करके आता हूँ। कितने भोले हैं सुदामा जी? भगवान कहते हैं मित्र आपको किसी कुएं पर जाने की जरूरत नहीं है। मैं आपको यही स्नान करवा दूंगा। भगवान ने उसी समय अपनी रानियों को आज्ञा दी की हमारे मित्र आये हैं तुम जाओ और हमारे मित्र के स्नान के लिए जल लेकर आओ।

सभी रानियां दौड़ कर गई ओर एक-एक कल। जल लेकर आई। अब सुदामा जी महाराज ने दूर से लम्बी लाइन देखी जिसका छोर भी नहीं दिखाई दे रहा है।

सुदामा जी को लगा कि द्वारिका की स्त्रियां हैं और भगवान का अभिशेक करने के लिए जल लेकर आती होंगी। सुदामा जी महाराज ने पूछा कि मित्र ये सब कौन हैं? कृष्ण जी बोले कि ये सब आपकी भाभियां हैं।

सुदामा जी बोले कितनी हैं?

कृष्ण बोले की बस थोड़ी सी हैं। 16108 ही हैं।

सुदामा जी बोले भैया मैं तेरी भाभी से मिलकर भी नहीं आया। एक कल हो तो स्नान करूं। दो कल। हो तो स्नान करूं। यहां तो 16108 कल। है यदि इतने कल। से स्नान करूंगा तो डेढ़ पाँव हड्डी को भारीर है यहीं गोविन्दाय नमो नमः हो जायेगो। कन्हैया मैं घर तक भी नहीं पहुंच पाऊंगा।

तब भगवान ने सभी रानियों से कहा कि देखो री हमारे मित्र सुदामा बैठे हैं और तुम मे से कोई एक हमारे मित्र पर जल डाल दो।

रानियां बोली की आप आज्ञा कीजिए कौन सी रानी जल डाले?

भगवान बोले कि अब ये भी धर्म संकट है। एक नाम लिया तो दूसरी नाराज हो जाएगी। अच्छा भगवान इसी रानी से ज्यादा प्रेम करते हैं।

पास में उद्धव जी महाराज खड़े थे भगवान ने कहा कि उद्धव जी बहुत जानी हैं। उन्होंने एक खाली कल। मंगाया सभी रानियों के कल से एक चम्मच जल लिया और उस खाली कल ख को भर दिया और भगवान को दिया कि प्रभु अब स्नान करवाईए। भगवान ने अब सुदामा जी को स्नान करवाया। सुंदर कपड़े पहनाये और धूप दीप से अपने मित्र की पूजा की है।

सुदामा जी बोले की यार तू आरती उतार रहा है यहां पेट में चूहे कूद रहे हैं। मुझे भूख लगी है। देखिए सुदामा जी कितने भोले हैं। कोई संकोच नहीं है। भगवान को कह दिया कि मुझे लगी है। भगवान बोले ठीक है आप बैठिए आपके लिए भोजन का प्रबंध कर देता हूँ। महल में हजारों नौकर हैं लेकिन भगवान ने किसी से सेवा नहीं ली। खुद ही सुदामा जी के लिए आसन बिछाये। दो चैंकियां लगाई और खाना परोसा है और भोजन परोस रहे हैं और इस प्रकार ठाकुर जी और सुदामा जी महाराज का मिलन हुआ जो की बड़ा ही आनन्दमय था।

सन्दर्भ

गणेश बिहारी मिश्र की मिश्रबंधु विनोद के अनुसार 1900 की खोज में इनकी कुछ अन्य रचनाओं 'विचार माला' तथा 'ध्रुव-चरित' और 'नाम-संकीर्तन' के संबंध में भी जानकारी मिलते हैं परन्तु इस संबंध में अब तक प्रामाणिकता का अभाव है। नागरी प्रचारिणी सभाए वाराणसी, की एक खोज रिपोर्ट में भी 'विचारमाला' व 'नाम-संकीर्तन' की अनुपलब्धता का वर्णन है। 'ध्रुव-चरित' आंशिक रूप से उपलब्ध है जिसके 28 छंद 'सवती' पत्रिका में 1968 अंक में प्रकाशित हुए।

डॉ. नगेन्द्र ने अपने ग्रंथ 'शीतिकालीन कवियों की सामान्य विशेषताएँ, खण्ड-2, अध्याय. 4' में सबसे पहले 'सवैयों' का प्रयोग करने वाले कवियों की श्रेणी में नरोत्तमदास को रखा है 'कवित्त' (घनाक्षरी) का प्रयोग भी सर्वप्रथम नरोत्तमदास ने ही किया था। यह विधा अकबर के समकालीन अन्य कवियों ने अपनायी थी।

सिधौली पत्रकार संघ के अध्यक्ष श्री हरिदयाल अवस्थी ने नरोत्तमदास की हस्तलिखित 'सुदामा चरित' के 9 पृष्ठ प्राप्त करने का भी दावा किया है परन्तु यह हस्तलिखित कृति लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति के पास काफी समय तक प्रामाणिकता की परीक्षण के लिए पड़ी रही, परन्तु निर्णय न हो सका।

इन पंक्तियों के लेखक के आदरणीय स्वर्गीय पितामह तथा आदरणीय पिताश्री को बाड़ी के सन्निकट स्थित ग्राम अल्लीपुर का मूल निवासी होने के कारण इस महान कवि के जन्मस्थल पर अंग्रेजों के समय से चलने वाले एकमात्र विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है जिससे वहाँ प्रचलित जनश्रुतियों को निकटता से सुनने का अवसर प्राप्त हुआ है। वहाँ प्रचलित जनश्रुतियों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।

Corresponding Author

Dr. Geeta Sahay*

Department of Hindi, Gaya College, Gaya, Bihar